B.A (Sanskrit, Hons) part - 3rd

paper - VI, Notes

- भाषा की परिभाषा, • भाषा और बोली

Dr. Sanjay Kumar Chaubey
(Assistant professor)
Dept. of Sanskrit
H.D. Jain college, Ara

Scanned by CamScanner

• भाषा की परिभाषा

भाषा वह है 'जिसे बोला जाय' क्योंकि - भाषा शब्द की उत्पत्ति भाष् धातु से हुई है जिसका अर्थ है, बोलना या कहना। विभिन्न विद्वानों एवं चिंतकों ने भाषा की परिभाषाएँ दी हैं, जिनमें विदेशी और देशी दोनों प्रकार के विद्वान सम्मिलित हैं—

(1) डा. श्यामसुन्दर दास के अनुसार :— ~~भाषा विनिमय~~ मनुष्य-मनुष्य के बीच वस्तुओं के विषय में अपनी इच्छा और मति का आदान प्रदान करने के लिये व्यक्त ध्वनि संकेतों का जो व्यवहार होता है, उसे भाषा कहते हैं।

(2) डा. बाबूराम सक्सेना :— जिन ध्वनि चिन्हों द्वारा मनुष्य विचार-विनिमय करता है, उसे भाषा कहते हैं।

(3) डा. भोलानाथ तिवारी :— भाषा मानव के उच्चारणावयवों से उच्चारित ध्वनि प्रतीकों की वह संरचनात्मक व्यवस्था है, जिसके द्वारा समाज विशेष के लोग आपस में विचार-विनिमय करते हैं। लेखक, कवि या वक्ता रूप में अपने अनुभवों और भावों आदि को व्यक्त करते हैं तथा वैयक्तिक और सामाजिक व्यक्तित्व विशिष्टता तथा अस्मिता के सम्बन्ध में जाने अनजाने जानकारी देते हैं।

(4) डा. मंगलदेव शास्त्री के अनुसार :— भाषा मनुष्यों की उस चेष्टा या व्यापार को कहते हैं जिससे मनुष्य अपने उच्चारणोपयोगी शरीरावयवों से उच्चारण किये जाने वर्णात्मक या व्यक्त शब्दों द्वारा अपने विचारों को प्रकट करते हैं।

(5) डा. देवीशंकर अवस्थी :— "वाक् स्थूल और भौतिक वस्तु है, भाषा सूक्ष्म और भावातीत वस्तु है। हम जो बोलते हैं या सुनते हैं, उसे वाक् कहते हैं। उसे सुनते-सुनते हम जो सीख लेते हैं, वह भाषा है। भाषा सीख लेने पर हम जो बोलते हैं, वह वाक् होती है।"

(6) महर्षि पतञ्जलि के अनुसार :— "व्यक्ता वाचि वर्णा येषां ते इमे व्यक्त वाचः" अर्थात् भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दूसरों पर भली-भाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार स्वयं स्पष्ट रूप से समझ सकता है (महाभाष्य 1.3.38)

(7) एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका :— सामान्य रूप से भाषा उसे माना जाता है, जिसके माध्यम से हम अपने विचार या भाव दूसरों तक पहुँचा सकें।"

Scanned by CamScanner

(8) प्लेटो के अनुसार :- विचार और भाषा में थोड़ा ही अन्तर है। विचार आत्मा की मूक या अध्वन्यात्मक बातचीत है, पर वही जब ध्वन्यात्मक होकर होठों पर प्रकट होती है तो उसे भाषा की संज्ञा देते हैं।

(9) क्रोचे के अनुसार :- भाषा उस स्पष्ट, सीमित तथा सुगठित ध्वनि को कहते हैं जो अभिव्यंजना के हेतु निर्धारित करती है।"

(10) स्वीट के अनुसार :- ध्वन्यात्मक शब्दों द्वारा विचारों को प्रकट करना ही भाषा है (Language may be defined as the expression of thought by means of Speech Sound.)

(11) ब्लाक तथा ट्रेगर के अनुसार :- भाषा व्यक्त ध्वनि चिन्हों की वह पद्धति है जिसके माध्यम से समाज के लोग आपस में व्यवहार करते हैं :- (A language is a system of arbitary vocal symbols by means of which a social group cooperates.)

(12) वेन्द्रिये के शब्दों में :- भाषा एक तरह का संकेत है। संकेत का आशय, उन प्रतीकों से है, जिनके द्वारा मानव अपने विचार दूसरों पर प्रकट करता है। ये प्रतीक कई प्रकार के होते हैं जैसे- नेत्रग्राह्य, कर्णग्राह्य और स्पर्शग्राह्य वस्तुतः भाषा की दृष्टि से कर्णग्राह्य प्रतीक ही सर्वश्रेष्ठ है।

(13) गार्डिनर के अनुसार :- विचारों की अभिव्यक्ति के लिये जिन व्यक्त तथा स्पष्ट ध्वनि संकेतों का व्यवहार किया जाता है, उन्हें भाषा कहते हैं।

(14) सपीर के शब्दों में :- Language is a purely Human and non-instinctive method of communicating ideas, emotions and desires by means of voluntarily produced symbols.

(15) चॉम्स्की के शब्दों में :- I will consider a language to be a set of sentences, each finite in length and constructed out of a finite set of elements.

Scanned by CamScanner

• भाषा और बोली

भाषा शब्द का प्रयोग कभी व्यापक अर्थ में होता है और कभी संकुचित अर्थ में। भाषा का सामान्य अर्थ के अतिरिक्त विभिन्न रूपों में भी प्रयोग होता है जैसे- सामान्य भाषा, बोली, विभाषा, राष्ट्रभाषा, राजभाषा, साहित्यिक भाषा, कृत्रिम भाषा आदि। इन रूपों में भाषा और बोली भी दो रूपों में प्रमुख है। डा. भोलानाथ तिवारी ने भाषाविज्ञान की दृष्टि से इनमें कोई विशेष अन्तर न मानते हुये लिखा है— "भाषा और बोली में शुद्ध भाषा वैज्ञानिक स्तर पर भेद बताना कठिन है। इनमें तात्त्विक अन्तर न होकर व्यवहारिक अन्तर है। दोनों में अधो-लिखित अन्तर देखा जाता है —

(1) भाषा का क्षेत्र अपेक्षाकृत बड़ा होता है जबकि बोली का क्षेत्र छोटा है।

(2) भाषा में प्रचुर साहित्य उपलब्ध होता है, जबकि बोली में या तो उपलब्ध ही नहीं होता या अत्यल्प मात्रा में उपलब्ध होता है।

(3) भाषा और बोली का सम्बन्ध माँ-बेटे जैसा है क्योंकि बोली किसी भाषा से ही उत्पन्न होते है।

(4) भाषा प्रायः साहित्य, शिक्षा तथा शासन के कार्यों में भी व्यवस्त होती है, किन्तु बोली बोलचाल में ही।

(5) भाषा का मानक रूप होता है, किन्तु बोली का नहीं।

(6) भाषा बोली की तुलना में अधिक प्रतिष्ठित होती है, अतः औपचारिक परि-स्थितियों में प्रायः इसी का प्रयोग होता है।

(7) बोली बोलने वाले भी अपने क्षेत्र के लोगों से तो बोली का प्रयोग करते हैं किन्तु अपने क्षेत्र के बहर के लोगों से भाषा का प्रयोग करते हैं।

(8) एक ही भाषा से सम्बद्ध अनेक बोलियाँ हो सकती हैं; लेकिन उनकी आधार भाषा एक ही होती है।

(9) भाषा 'विभाषा' का बड़ा रूप है जबकि बोली विभाषा का छोटा रूप है।

(10) भाषागत वाक्यरचना परिष्कृत होती है, जबकि बोलीगत वाक्यरचना अपरिष्कृत तथा अशुद्ध होती है।

(11) व्यक्तिभेद से बोली में अन्तर देखा जाता है, लेकिन भाषा में नहीं।

(12) भाषागत वाक्य कठिन, लम्बे, तथा समासयुक्त होते हैं; जबकि बोली-गत वाक्य सरल, छोटे तथा प्रायः समासरहित होते हैं।

Scanned by CamScanner

(14) भौगोलिक भेद से बोली में अन्तर देखा जाता है जैसे - भोजपुरी के अनेक रूप देखे जाते हैं लेकिन भौगोलिक भेद से भाषा में अन्तर नहीं आता है क्योंकि इसका व्याकरण सुनिश्चित होता है।

(15) भाषा शिक्षा एवं उच्चशिक्षा की माध्यम होती है जबकि 'बोली' लोकगीत एवं बोल-चाल तक ही सीमित रहती है।

(16.) बोली को उपभाषा भी कहते हैं। गृह, ग्राम व समाज में बोली जाने वाली स्थानीय भाषा बोली कहलाती है। भाषा के स्थानीय और प्रान्तीय भेदों के अतिरिक्त ऐसे भेद भी होते हैं जो एक ही स्थान पर रहने पर भी मनुष्यों के भिन्न-भिन्न समूहों या वर्गों में पाये जाते हैं।

Scanned by CamScanner